MAJOR COURSE - UNIT - 1

Date : ....

Expt. No. .... अन्तःनिरीक्षण विधि (Introspective Method) Page No. ...1...

किसी भी विज्ञान के लिए दो बातें आवश्यक है। एक तो यह कि उसकी अपनी निश्चित विषय-वस्तु या अध्ययन-विषय (Subject matter) हो और दूसरी बात यह कि उसकी अपनी वैज्ञानिक विधि हो। विषय-वस्तु या अध्ययन विषय का अर्थ उन विषयों से है, जिनका अध्ययन वह विज्ञान करता है।

विधि का अर्थ उस प्रक्रिया या माध्यम से है, जिसके द्वारा विषय-वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है।

जहाँ तक मनोविज्ञान की बात है, तो इसकी सबसे पहली विधि अन्तःनिरीक्षण विधि है। इस विधि का व्यवहार सबसे पहले वुण्ट (Wundt) नामक मनोवैज्ञानिक ने किया। उन्होंने 1879 ई० में जर्मनी के लिपज़िग (Leipzig) में मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला की स्थापना की, और चेतन अनुभूति का अध्ययन अन्तःनिरीक्षण विधि के द्वारा किया। उन्होंने चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान का अध्ययन विषय तथा अन्तर्निरीक्षण को विधि माना। अन्तःनिरीक्षण का अर्थ अपने भीतर देखना (to look within) है। अतः अन्तःनिरीक्षण वह विधि है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी चेतन अनुभूतियों का निरीक्षण स्वयं करता है, और उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त करता है।

चैपलिन (Chaplin, 1975) ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है- " अन्तः निरीक्षण चेतन घटक के तत्वों तथा गुणों के वस्तुनिष्ठ विवरण को कहते हैं।"

"Introspection is the objective description of Conscious Content in terms of its elements and attributes."

Teacher's Signature : Dr. Gajendra Tiwari
Department of Psychology
G.D. College Bagaha.
M.No - 9693082589

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि अन्तःनिरीक्षण के लिए दो बातें आवश्यक हैं। एक बात तो यह है कि इस विधि में व्यक्ति अपने चेतन अनुभव (Conscious Experience) का वर्णन उसी रूप में करता है, जिस रूप में अनुभव होता रहता है और वर्णन की प्रक्रिया उसी समय तक चलती है जब तक अनुभव की क्रिया चलती रहती है। अनुभव के समाप्त हो जाने पर यदि उसका वर्णन किया जाय तो उसे अन्तःनिरीक्षण नहीं कहा जायेगा।

दूसरी बात यह है कि इस विधि में निरीक्षक को चेतन अनुभूति के रचनात्मक तत्वों (constituent elements) का वर्णन करना होता है।

उण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के तीन रचनात्मक तत्व हैं, जिन्हें संवेदना (Sensation), भाव (Feelings) तथा प्रतिबिम्ब या प्रतिमा (Image) कहते हैं।

अन्तःनिरीक्षण विधि के गुण (Merits of Introspective Method):-

व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों के विरोध के बावजूद भी इस विधि के कई ऐसे गुण हैं, जो व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने आज भी किसी न किसी रूप में इस विधि को व्यवहार में लाते रहे हैं। आज भी अन्तःनिरीक्षण प्रयोग विधि का एक अंग है। वास्तव में इस विधि के कई अवगुण होते हुए भी इसे पूर्ण रूप से नकारा नहीं जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अन्तःनिरीक्षण विधि के कई गुण हैं, जो कि निम्नलिखित हैं:-

Dr. Gajendra Tiwari
Teacher's Signature : .....
Department of Psychology
Govt. Degree College - Bagaha
M.No- 9693082589